**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 223-225**

# नरेन्द्र कोहली की कहानियों में नारी मनोविज्ञान

**डॉ० स्नेह**

पी–एच.डी. हिन्दी, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमचल प्रदेश, भारत।

## पस्तावना

नरेन्द्र कोहली जी में कहानियाँ लिखने की अद्भुत क्षमता है। इनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन से सम्बंधित हैं। नरेन्द्र कोहली जी की कहानियाँ सामाजिक, राजनैतिक एवं मानसिक अर्न्तद्वंद की अभिव्यक्ति वाली कहानियाँ हैं।

नरेन्द्र कोहली जी ने नारी जीवन का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। नारी की ममत्त्व भावना, प्रेम भावना, अस्तित्व भावना, नारी सुलभ गुणों से युक्त प्रत्येक भावना का अच्छे ढंग से वर्णन किया है। कथा कहने की कला सूक्ष्म–विवेचन, गहन समाज सम्पृक्ति और गंभीर सांस्कृतिक चिंतन से ओत–प्रोत उनका कथा संसार पाठक का मंनोरंजन ही नहीं करता, बल्कि दिल–दिमाग की खिड़कियां भी खोलता है। उनकी तीक्ष्ण व्यंग्य–दृष्टि जहाँ समाज की विकृतियों, विषमताओं एवं विवशताओं को उद्घाटित करती है, वहीं पर भारतीय जीवन–मूल्यों से जुड़ा उनका गहन–चिंतन भारतीय परंपरा को नया अर्थ देता प्रतीत होता है। भाषा का सहज प्रवाह उनकी रचनाओं की रोचकता को बढ़ाता है।

अपने समाज से उदासीन रहकर अथवा उनसे कटकर कोई व्यक्ति या राष्ट्र आधुनिक नहीं हो सकता। यह एक अनिवार्य सच्चाई है। इसी को कोहली जी ने अपने कथा साहित्य में रेखांकित किया है। नरेन्द्र कोहली जी ने भारतीय नारी का अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से चित्रण किया। उनकी कहानियाँ इसका उदाहरण हैं। नरेन्द्र कोहली में कहानियाँ गढ़ने की अद्भुत कला है।

## देशभक्ति की भावना

मनोविज्ञान की निरीक्षण विधि द्वारा मानव की मानसिक विकृतियों के कारणों का पता चलता है। इस विधि से पता चलता है कि ऐसे कौन से मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मनुष्य ऐसा व्यवहार करता है।

'चुंभन' कहानी में आर्थिक अभावों का चित्रण किया है कि किस प्रकार अपनी जरूरतें पूरी न होने के कारण आज का व्यक्ति देश की अस्मिता के प्रतीक झंडे का भी सम्मान नहीं कर पाता। इस कहानी में दो पात्र हैं। माँ और बेटा जगदीश। एक दिन माँ घर में अकेली होती है। जगदीश काम के सिलसिले में बाहर गया होता है तो एक आदमी अम्मा को तिरंगा झंडा दे जाता है। झंडा देखकर अम्मा बहुत खुश होती है और सोचती है कि इसे मैं अपनी झोपड़ी की छत पर फहराऊँगीं परन्तु उसका पुत्र कहता है "फहराओगी तो धूप–वर्षा से फट जाएगा...संभालकर रखोगी तो चूहे और कीड़े खा जाएंगे। नया कपड़ा मिला है। इसका कुछ कर लो।"1

माँ को जगदीश की बात अच्छी नहीं लगी। परन्तु वह चुप नहीं होता, वह फिर कहता है, "रोटियाँ लपेटने वाला पौना बना लो या... .....फिर मेरे लिए इसका थैला बना दो।"[2] माँ जगदीश को डांटते हुए कहती है "जगदीश! कुछ तो शरम कर! तू मुझे गांधी जी और पंडित नेहरू के झंडे का थैला बनाने के लिए कहता है।"[3] और रो पड़ती है। उसे लगता है कि आर्थिक अभावों ने बेटे के दिल में किसी भी चीज का सम्मान ही रहने नहीं दिया है। जब उसका जी हल्का होता है तो वह बेटे की बात मान जाती है और कपड़े का नाप जोखकर थैला बनाती है।

जब उसे थैले को सीने लगती है तो सुई उसके दिल में चुभती है कि मैंने अपने देश के सम्माननीय झण्डे का थैला बनाया।

इस कहानी में माँ की देश–भक्ति की भावना का पता चलता है। आर्थिक अभाव माँ को झण्डे का थैला सीने पर मजबूर करते हैं। माँ के दिल में अपने देश के प्रति गहरा लगाव है न चाहते हुए माँ को मजबूर होकर करना पड़ता है।

## प्रेम भावना

'वापिसी' कहानी में लेखक ने बताया है कि पत्नी के प्रेम और विश्वास के कारण ही उसका पति फिर से अच्छा जीवन शुरू कर देता है। इस कहानी में राजन और सरला दोनों नौकरी करते है। अचानक राजन बीमार हो जाता है और उसकी नौकरी छूट जाती है। दिन–भर वह घर में पड़ा रहता है। अब सरला को नौकरी और बच्चों के साथ राजन की भी देखभाल करनी पड़ती है। वह उसे डाक्टर के पास ले जाती है।

डाक्टर उसकी बीमारी के बारे में पूछता है तो वह कहता है, ''मैं जीना नहीं चाहता....आई हैव नो चार्म इनलाइफ।''[4] डॉक्टर राजन की बात सुनकर सरला से कहता है कि ''इनमें जीने की इच्छा नहीं उठेगी, दवाइयां कुछ नहीं कर सकती। आप इन्हें प्रेम दीजिए। उनके साथ प्रेम और विश्वास की बात होनी चाहिए।''[5]

अब सरला राजन का पूरा ख्याल रखती है। थोड़े ही दिनों में राजन ठीक हो जाता है और दोबारा दफ्तर जाने लगता है। इस प्रकार इस कहानी में राजन सरला के प्रेम और विश्वास से नई जिंदगी प्राप्त करता है। प्रेम भावना से नया जीवन राजन को मिलता है। पत्नी चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है और यदि वह चाहे तो घर नरक भी बन सकता है।

नरेन्द्र कोहली की 'मालिनी' कहानी भी प्रेम–भावना से ओत–प्रोत है। इस कहानी की नायिका मालिनी के चरित्र के बारे में लेखक ने लिखा है, 'जो घर ऐरे–गैरे के साथ जहां–तहां चल पड़े, किसी के भी साथ रेस्तराँ में जा बैठे, पिक्चर चली जाए, कारों में लिफ्ट ले उसे आवारा नहीं तो और क्या कहा जायेगा ठीक ऐसी ही थी मालिनी।"[6]

परन्तु मालिनी अत्याधिक आधुनिका होने पर भी अपने बॉस के साथ खुल नहीं पाती। हमारी संस्कृति के अनुकूल मालिनी अपने बॉस से इसलिए नहीं खुल पाती क्योंकि मालिनी उससे प्यार करती थी। चाहता तो मालिनी का बॉस भी उसे था परन्तु मालिनी के संकोच को वह अपना तिरस्कार समझ बैठा और अपने आप से कहता है, "वह नहीं मिली तो इसका यह अर्थ तो नहीं था कि वह किसी भी साथी की आशा छोड़ दे।"[7] और उसने दूसरी लड़की चुन ली।

वह शादी का कार्ड लेकर जब मालिनी के पास जाता है तो मालिनी उस कार्ड को फाड़ती हुई कहती है, "तुम्हारी शादी हो

जाएगी तो मैं क्या करूँगी।"[8] यह बातें मालिनी की प्रेम भावना को दर्शाती है। वह अपने बॉस से प्रेम तो करती थी, लेकिन उसे बता नहीं पातीं। इससे मालिनी का बॉस बौखला जाता है और उससे कहता है कि ''तुम हमेशा औरों के साथ घमने जाती थी औरों के साथ बातें करती थी। मेरे से तुमने कभी बात तक नहीं की और न ही मेरे साथ कहीं गई इस पर वह कहती है, ''कैसे जाती तुम्हारे साथ...में तुमसे प्यार जो करती थी। तुमसे लाज आती थी।''[9]

**अराष्ट्रीयता की भावना**

'हिन्दुस्तानी' कहानी में लेखक ने लड़कियों में बढ़ती फैशन परस्ती और पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण के दुष्परिणामों का चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका नीलिमा पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगी हुई है। वह अमेरिकन अम्बैंसी में कोन्फीडैन्शियल सैक्रेटरी की पी.ए. है। इस लड़की की वेश–भूषा का चित्रण लेखक उसके सहकर्मी से करवाते हुए लिखता है, ''बड़े एडवांस्ड घर की है। रंगा–पुता चेहरा, नकली भौहें, नकली पलकें, नकली बरौनियां। कटे बाल नंगे कंधे, उभरे वक्ष और कसी टाईट सी कमीज। ऐसी कमीज जिसके नीचे सलवार नहीं पहनते।''[10] वह यानि नीलिमा अपने दफ्तर में ग्यारह बजे से पहले कभी नहीं पहुँचती और सारा दिन बॉस की केबिन में ही रहती है। उसे गर्भ रह जाता है। उसका सहकर्मी उसे गर्भ गिराने के लिए कहता है परन्तु वह नहीं मानती। उसका सहकर्मी समझाते हुए कहता है, "ऐसे तुम्हारा जो बच्चा होगा, वह दोगला होगा, हरामी होगा, दुनियाँ में उसका कोई सम्मान नहीं होगा... ।"[11]

इस पर नीलिमा कहती है, "मैं जानती हूँ कि वह दोगला होगा। पर उसका सम्मान मुझसे ज्यादा होगा, तुमसे ज्यादा होगा, क्योंकि वह भारत जैसे घटिया राष्ट्र का अंग नहीं होगा। मैं जिन्दगी भर अपनी राष्ट्रीयता के कारण लज्ज़ित रही, पर मैंने अपनी अगली पीढ़ी को उससे उबार लिया है।"[12]

इस कहानी में अराष्ट्रीयता की भावना का चित्रण हुआ है इस कहानी में लेखक ने हमारे हिन्दू समाज के उस वर्ग पर कटाक्ष किया है, जिन्हें अपनी संस्कृति को अपनाने में शर्म आती है और दूसरे की संस्कृति को अपनाता जा रहा है।

**अस्तित्व की भावना**

'पिल्लू' कहानी में लेखक ने पुरूष के अहं को चित्रित किया है। उसे सिर्फ अपनी भावनाओं का ख्याल होता है, वह दूसरे की यहां तक की अपनी पत्नी की भावनाओं और अस्तित्व की भी कद्र नहीं कर पाता।

'पिल्लू' कहानी की अनीता कहानियां लिखती है। एक दिन उसकी कहानी एक पत्रिका में छप जाती है तो वह बहुत खुश होती है और सारा दिन अपने पति हेमेन्द्र का इंतजार करती है। परन्तु जब हेमेन्द्र आता है तो वह उसकी उत्सुकता की तरफ कोई ध्यान नहीं देता और कहता है कि जल्दी खाना लगाओ। परन्तु अनीता से रहा नहीं जाता और वह अपने पति से कहती है, "सुनो मेरी एक कहानी दैनिक 'विश्वामित्र' में छप गई है।"[13] हेमेन्द्र की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती और वह चुपचाप खाना खाता रहता है।

अनीता को बुरा लगता है और खाने के बाद वह पलंग पर जाकर लेट जाती है और कहानियों और पत्रिकाओं के बारे में ही सोचती रहती है। थोड़ी देर बाद जब अनीता कुछ नहीं बोलती तो हेमेन्द्र अनीता को अपनी तरफ खींचता है तो वह बोलती है कि मुझे मत छुओ। मैं एक कहानी लेखिका हूँ। इस पर हेमेन्द्र कहता है, "जो कुछ भी हो मेरी तो पत्नी ही हो न।"[14]

अनीता को हेमेन्द्र की बात बुरी लगती है, वह उसकी किसी भी बात का जवाब नहीं देती, उसे अपने आप से भी वितृष्णा हो जाती है कि वह औरत है। इसलिए एक पुरूष की औरत के सिवा वह कुछ नहीं बन सकती। न ही पुरूष उसके अस्तित्व को स्वीकार कर सकता है।

**आत्मसम्मान की भावना**

किशोरावस्था में आत्मसम्मान की भावना प्रबल हो जाती है। व्यक्ति जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और समाज में उपयुक्त स्थान पाना चाहता है। अपने सम्मान की रक्षा के लिए ही कभी–कभी वह सामाजिक बंधनों का विरोध भी करता है और स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन बिताने में अपना गौरव समझता है।

इसी भावना से ओत–प्रोत कहानी है 'होने वाली पत्नी' इसमें संगीता अपने आत्म सम्मान की रक्षा करती है और होने वाले पति से रिश्ता तोड़ देती है।

'होने वाली पत्नी' कहानी आज की युवा पीढ़ी की बदलती मानसिकता की प्रतीक है। संगीता और सतीश की सगाई संगीता के मां–बाप की मर्जी से होती है। सतीश खुले विचारों वाला आधुनिक लड़का है। सगाई के बाद ही संगीता को बाहों में भी शादी से पहले भर लेता है। संगीता को यह सब अच्छा नहीं लगता। परन्तु वह जितना हो सके, सतीश से सतर्क रहती है। ज्यादा कोई बात नहीं करती। सतीश संगीता को बहुत से प्रेम–पत्र लिखता है। संगीता उनका जवाब भी साधारण तरीके से ही देती है।

एक दिन वह दोबारा घर पर संगीता से मिलने के लिए आता है। संगीता के मां–बाप उन दोनों को अकेले घर पर छोड़कर पार्टी में चले जाते हैं। दोनों सतीश और संगीता अकेले घर पर होते हैं। रात को थोड़ी देर लॉन में टहलने के बाद सतीश उस खींचकर अपने कमरे में ले आता है। जब तक संगीता कुछ समझ पाती वह दोनों बिस्तर पर थे। संगीता एकदम झटके से बिस्तर पर से उठती है और कहती है कि यह सब क्या है? सतीश उसे दोबारा बाहों में भरता हुआ कहता है, "संगीता तुम मेरी पत्नी हो...क्या। मैंने कुछ अनुचित किया?'[15] इस पर संगीता कहती है, "हूँ नहीं। होने वाली हूँ। अभी मैं कुंवारी हूँ। आप मुझसे... ।"[16] इससे सतीश बुरा मान जाता है और वह रिश्ता तोड़ देता है। इस प्रकार संगीता अपने आत्मसम्मान की रक्षा करने में सफलता प्राप्त करती है।

**स्वतन्त्रता की भावना**

'एक ही विकल्प' कहानी एक लड़की की कहानी है। वह लड़की दिन भर काम करती है। परन्तु वह अपने ही घर स्वतंत्र नहीं है। वह न अपने मन की बात कह सकती है और न कर सकती है। सबसे ज्यादा तंग उसकी माँ करती है। वह सारा दिन काम में ही लगाकर रखती है।

जब वह पढ़ने का नाम लेती तो माँ कहती 'लो स्यापा! पढ़ना है। पुराने समय में लड़कियां घर का सारा काम करती थी... अब इनसे सुनो पढ़ना है। पढ़ना न हो गया, स्यापा हो गया... बड़ी आयी पढ़ने वाली! लड़कियां चूल्हे चौके का काम भी न करे तो उनका आचार डालना है हमें।"[17]

लड़की की माँ अपनी बेटी को दिन भर मकान से नीचे नहीं उतरने देती क्योंकि उसका मेल–जोल पड़ोस की लड़की निर्मला से है। निर्मला फैशनेबल आधुनिका है। मुहल्ले में कोई निर्मला को अच्छी नजर से नहीं देखता। परन्तु इन सब बातों का निर्मला पर कोई असर नहीं होता और वह अपनी दुनिया में मस्त रहती है।

लड़की का मन जब उदास होता है तो वह निर्मला के पास चली जाती और मन में सोचती है "जितने बंधनों में हमारे घर वाले हमें बांधना चाहते है, उतने बंधनों में कोई जी नहीं सकता। इनमें या तो व्यक्ति मेरी तरह घुटता–घुटता मर जाएगा।"[18] इस तरह वह लड़की भी निर्मला की तरह स्वतंत्र होकर अपना जीवन जीना

चाहती है। उसके मन में निर्मला से मिलकर स्वतंत्रता की भावना जागृत होती है।

**ममत्त्व भावना**

'किरचें' कहानी में लेखक ने लि की ममत्त्व भावना का वर्णन किया है। मौसम खराब होने पर लि और उसका पति हो कई दिनों तक घर से बाहर नहीं निकले। मौसम ठीक होने पर हो काम के सिलसिले में बाहर चला गया और लि घर के छोटे–छोटे कामों में लग गयी।

कुछ दिनों से उसके मन में कुछ विशेष कामों के प्रति तीव्र उत्कंठा पैदा होने लगी थी। वह माँ बनने वाली थी। दो साल पहले भी लि इन्हीं दिनों माँ बनने की प्रतीक्षा कर रही थी, तब उसके बेटा पैदा हुआ था और अब लि जानती है कि उसकी गोद में बिटिया आने वाली है। लि के मन में इन दिनों ममता बहुत उमड़ती है। उसके भीतर दुगुनी ममता है, पर अभी अपनी अनजाई बिटिया को वह प्यार नहीं कर पाती। बस कभी–कभी एकांत पाकर अपने उभरे हुए पेट पर धीरे से हाथ फिरा लेती है और उससे बातें कर लेती है। जब भीतर ही भीतर बहुत हिल–डुल होती है तो बच्ची को प्यार से शरारत के लिए डांट भी देती है "क्यों तंग करती है, विट्टो मेरी।"[19] लि उसे समझाती है "अभी से इतनी शैतान है तू, तो जन्म लेने के बाद क्या करेगीं न बेटी! मां को तंग नहीं करते।"[20] कैसे लि अपनी ममत्त्व भावना को उड़ेल रही है।

**समर्पण भावना**

'वेश्या का नौकर' कहानी एक पति–पत्नी की कहानी है। इस कहानी का नायक बूटाराम तंदूर शुरू करता है। पहले पहल तो यह तंदूर पर रोटियां शुरू करता है कि आस–पास की मेम साहब यहाँ से तंदूर की रोटियां ले लिया करेगी और उसकी आजीविका चल पड़ेगी। परन्तु साथ ही टैक्सी स्टैंड होने के कारण उसका तंदूर का काम अच्छा चल पड़ा और ड्राइवरों के रोज खाना खाने के कारण उसके तंदूर ने ढाबे का रूप ले लिया। काम बढ़ जाने के कारण बूटाराम की पत्नी जिन्दों भी उसका हाथ काम में बंटाने लगी। पहले–पहले तो बूटाराम को अपनी पत्नी का ढाबे पर काम करना अच्छा लगा। परन्तु एक दिन ट्रक ड्राइवर संतोख सिंह ने ठिठोली में बूटाराम को कहा, "तेरा होटल बड़े–बड़े होटलों को मात कर रहा है, बूटे! क्नॉट प्लेस के भी किसी होटल पर अभी तीवीं नज़र नहीं आई।"[21] इस बात का बूटाराम बुरा मान जाता है और वह अपनी पत्नी को शक की निगाहों से देखने लगा। वह अपनी पत्नी की ग्राहकों से बातचीत पर भी शक करने लगा।

इस कहानी में लेखक ने मानव मन में झांककर यह सिद्ध किया है कि एक पुरूष किस हद तक अपनी पत्नी पर शंकालु हो सकता है क्योंकि वह पत्नी के समर्पण भाव को नहीं समझ पाता। वह घर भी देखती है, बच्चों को भी संभालती है और दुकान में अपने पति का हाथ भी बंटाती है जबकि पति उसका उपयोग अपनी निर्जीव सम्पत्ति के रूप में ही करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि नरेन्द्र कोहली आधुनिक युग के कहानीकार हैं। उनकी कहानियों की अपनी अलग पहचान और विशेषता है। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी मनोविज्ञान का ऐसा चित्रण प्रस्तुत किया, वैसा किसी भी आधुनिक कहानीकार की कहानियों में नहीं मिलता। उनकी कहानियां जीवन में होने वाली छोटी–छोटी घटनाओं के चिरंतन सत्यों का उद्घाटन करती हुई चलती है।

नरेन्द्र कोहली जी ने अपनी कहानियों में नारी क्या सोचती है? कैसा सोचती है? उसमें कौन–कौन से गुण है और कौन–कौन सी कमियां है आदि प्रत्येक क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाई है। भारतीय नवयुवक किस प्रकार पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं और अपनी सभ्यता और संस्कृति को भुला रहे हैं। इन सबका वर्णन उन्होंने अपनी कहानियों में किया है। इन सबसे बढ़कर उन्होंने नारी–मनोविज्ञान का चित्रण अपनी कहानियों में बहुत ही सूक्ष्म दृष्टि से किया है।

**सन्दर्भ**


1. 'चुंभन' (समग्र : कहानियाँ–2), नरेद्र कोहली : पृष्ठ संख्या 143
2. वही वही, वही : पृष्ठ संख्या 143
3. वही वही, वही : पृष्ठ संख्या 144
4. 'वापिसी' (समग्र कहानियाँ–1), नरेन्द्र कोहली : पृष्ठ संख्या 233
5. वही : वही
6. 'मालिनी' (समग्र कहानियाँ–1), नरेन्द्र कोहली : पृष्ठ संख्या 114
7. वही, वही : पृष्ठ संख्या 117
8. वही, वही : पृष्ठ संख्या 118
9. वही, वही : पृष्ठ संख्या 118
10. 'संतुलन' (समग्र कहानियाँ–2), वही : पृष्ठ संख्या 26
11. वही, वही : पृष्ठ संख्या 30
12. वही, वही : पृष्ठ संख्या 30
13. 'पिल्लू' (समग्र कहानियाँ–1), वही : पृष्ठ संख्या 179
14. वही, वही : पृष्ठ संख्या 180
15. 'होने वाली पत्नी' (समग्र कहानियाँ–1), नरेन्द्र कोहली : पृष्ठ संख्या 104
16. वही, वही : पृष्ठ संख्या 105
17. 'एक ही विकल्प' (समग्र कहानियाँ–2), नरेन्द्र कोहली : पृष्ठ संख्या 280
18. वही, वही : पृष्ठ संख्या 302
19. 'किरचें' (समग्र कहानियाँ–1), नरेन्द्र कोहली : पृष्ठ संख्या 307
20. वही, वही : वही
21. 'वेश्या का नौकर', नरेन्द्र कोहली : पृष्ठ संख्या 265